राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का कार्पोरेट सोशल रिस्पान्सिबिलिटी विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में उद्बोधन

स्थान :- जबलपुर दिनांक :- 05 अक्टूबर, 2012 समय :- शाम 5.30 बजे

मुझे जेवियर इन्स्टिट्यूट आफ डेवलपमेंट एक्शन एण्ड स्टडीज, जबलपुर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में उपस्थित होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है।

हर्ष का विषय है कि यह संस्था लाभ- हानि से परे समाज की सेवा, अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा तथा सामाजिक तथा विकास कार्यो को संचालित करने की दिशा में सतत् सक्रिय है। यह संस्था देश के कुछ श्रेष्ठ प्रबंधन शिक्षा के संस्थानों के साथ मिलकर काम कर रही है, अत: नतीजों की विश्वसनीयता ज्यादा होती है।

इस संस्थान के संबंधित विभाग द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधान, सामाजिक प्रभावों के मूल्यांकन, आवश्यकता के अनुमानों का अध्ययन, सामाजिक- आर्थिक अध्ययन और पर्यावरण के प्रभावों का मूल्यांकन की गतिविधियां अच्छे परिणामों के प्रति आश्वस्त करती है।

मनुष्य को जीवन भर जिम्मेदारियों का निर्वाह करना पड़ता है। बचपन की देहली लांघने के बाद मनुष्य पर क्रमश: जिम्मेदारियां आना शुरू हो जाती हैं। यह जिम्मेदारियां व्यक्तिगत होती हैं। जिसके तहत व्यक्ति भविष्य के लिए स्वयं को सक्षम बनाने के उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है अपने ज्ञान कौशल की वृद्धि करता है। भारतीय जीवन मूल्यों और संस्कारों को अपने माता-पिता, अपने गुरू और बुजुर्गों से ग्रहण करता है। वयस्क होने पर व्यक्ति को अपने आश्रितों के पालन-पोषण और उनके भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं। इसके लिए व्यक्ति नौकरी, दूसरे व्यवसायों तथा अन्य काम धन्धों के जरिये धन अर्जित करता है।

लेकिन एक व्यक्ति की जिम्मेदारियां मात्र इतनी ही नहीं होती हैं। व्यक्तिगत और पारिवारिक जिम्मेदारियों के अलावा एक व्यक्ति की समाज और राष्ट्र के प्रति भी जिम्मेदारियां होती हैं। सीधे अर्थों में कहा जाये तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जन्म भूमि की माटी, समाज और राष्ट्र का कर्ज चुकाना होता है। यह कर्ज धन राशि नहीं होती। यह कर्जा वह होता है जो उसे अपनी जन्म

भूमि से, अपने समाज से, अपने राष्ट्र से अवसरों के रूप में और जीवन- मूल्यों के रूप में मिलता है।

सामाजिक जिम्मेदारियां अब सीमित नहीं रह गई हैं, उनका विस्तार हुआ है। आज बड़े व्यवसायिक घरानों और बड़े औद्योगिक समूहों में भी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति चेतना जाग्रत होती दिखाई दे रही है। इस अवधारणा को कार्पोरेट सोशल रिस्पान्सिबिलिटी का नाम दिया गया है।

कार्पोरेट सेक्टर की जो सामाजिक जिम्मेदारियां हैं वे स्थान, उद्योगों और समय के लिहाज से अलग-अलग होती हैं। कार्पोरेट कम्पनी की सामाजिक जिम्मेदारियों की स्वीकार्यता में लगातार वृद्धि हो रही है। इस अवधारणा को बहुत प्रशंसा भी हासिल हुई। किसी कम्पनी की सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन की नीतियां और कार्यक्रम तैयार करते समय कम्पनी के भागीदारों और उनकी आवश्यकता तथा उम्मीदों को ध्यान में रखा जाता है। व्यवसायिक संगठनों द्वारा अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों के साथ-साथ स्थानीय समुदायों के बेहतर गुणवत्तायुक्त जीवन, मानवीय व्यवहार और उनके आर्थिक विकास में भागीदारी की जाती है।

सामाजिक जिम्मेदारियां समुदायों के प्रति वह प्रतिबद्धता है जिसके स्वैच्छिक आधार पर उत्पादकों, नियोक्ताओं ग्राहकों,व्यवसायियों और नागरिकों के रूप में उनके दायित्वों का प्रबंधन होता है। दीर्घकालीन स्थायित्व  पाना व्यवसायिक सामाजिक जिम्मेदारियों का मुख्य उद्देश्य बन गया है। भारत में व्यावसायिक सामाजिक जिम्मेदारियों की परिकल्पना नयी नहीं है। यह अवधारणा कौटिल्य के कालखंड से अस्तित्व में है। यहां तक कि गांधी जी ने 'सर्वोदय' के संदर्भ में सामाजिक जिम्मेदारियों की अवधारणा को मान्यता दी थी। गांधी जी ने धर्म,जाति-पांति,रंग-नस्ल के भेदभाव से ऊपर उठकर समाज के वंचित सदस्यों के प्रति सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन पर जोर दिया था।

व्यवसायिक नैतिकता के मुद्दों की मात्रा और सीमा इस बात से प्रदर्शित होती है कि व्यवसाय में आर्थिक- सामाजिक मूल्यों को वह किस हद तक अपनाता है। आज की ज्यादातर प्रमुख कम्पनियां गैर आर्थिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति वचनबद्धता पर जोर दे रही हैं।

एक व्यवसायिक संगठन का नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने मालिक या स्टाकहोल्डर्स के हितों की सेवा तक ही अपने को सीमित न रखे और वह सिर्फ कानून का पालन ही न करे। उसकी नैतिक

जिम्मेदारियां अपने हितधारकों, व्यवसाय के संचालन से जुड़े  व्यक्तियों, कर्मचारियों, ग्राहकों, विक्रेताओं, स्थानीय समुदाय या पूरे समाज के प्रति होती है।

कार्पोरेट सेक्टर द्वारा विभिन्न विषय-वस्तु पर आधारित गतिविधियां जैसे कि वाटर शेड मैनेजमेंट, महिलाओं का सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण, साक्षरता प्रसार, आय उत्पादक गतिविधियां, पर्यावरण संधारण एवं सुरक्षा, महिलाओं और बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा एवं उनकी शिक्षा के प्रबंध और दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, बाल विवाह, मद्यपान, बाल श्रम जैसी कुरीतियों के खिलाफ चलाई जानी चाहिए।

इस कार्य क्षेत्र में स्वयं सेवी संस्थाओं और सामाजिक संगठनों द्वारा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। इस अवधारणा को समझने, इसमें विभिन्न आयामों, विभिन्न नीतियों और उसमें अन्तर्निहित उद्देश्यों को समझने के लिए शासन, कार्पोरेट सेक्टर, स्वयं सेवी संस्थाओं और अकादमिक व्यक्तित्वों के बीच निरंतर संवाद होना चाहिए। इससे  आम आदमी के विकास के लिए व्यवसायिक संगठनों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे प्रयासों को नई ऊर्जा मिलेगी। टिकाऊ विकास की नीतियां बनाने में भी यह मददगार होगा। कम्पनी के भागीदारों की सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में आने वाली समस्याओं का त्वरित समाधान भी संभव हो सकेगा। यह छात्रों को भी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति संवेदनशील बनायेगा।

मैं मानता हूं कि वही व्यक्ति अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां निभाने में सफल होता है जिसे जीवन मूल्यों और संस्कारों के रूप में ईमानदारी, चारित्रिक बल, नैतिकता, कर्तव्य-बोध, संकल्पबद्धता, दृढ़ निश्चय, निरंतर कठोर मेहनत और राष्ट्र प्रेम की शिक्षा मिलती है। जब ऐसे संस्कारित व्यक्तियों का समूह कोई व्यवसायिक संगठन बनाते हैं तो वह संगठन भी राष्ट्र और समाज के प्रति अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का सफल निर्वहन कर सकेगा।

अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि चाहे व्यक्ति हो या व्यवसायिक संगठन सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन दोनों का नैतिक कर्तव्य है।

जय हिन्द।